उत्तर आधुनिकता का स्वरूप एवं परम्परा

प्रो0 (डॉ0) विष्णु कुमार अग्रवाल,
अध्यक्ष–हिन्दी विभाग,
शास.स्ना.उत्कृष्ट महाविद्यालय,मुरैना,म.प्र

जगपाल सिंह यादव,
शोधार्थी–हिन्दी,
जीवाजी विश्वविद्यालय,ग्वालियर,म.प्र

शोध सारांश

उत्तर–आधुनिकता एक दशा को इंगित करने वाला शब्द है जिसकी अभिव्यक्ति हम संस्कृत, कला, साहित्य और वास्तुशास्त्र में देखते हैं । यह एक ऐसे ऐतिहासिक काल को इंगित करने वाला शब्द है जिसे सामान्यतः आधुनिक युग का उत्तरवर्ती काल माना जाता है । उत्तर–आधुनिकता एक ऐसा संश्लेषणात्मक समाजशास्त्रीय सिद्धान्त है जो विभिन्न ज्ञान शाखाओं से तथ्यों और अवधारणाओं को लेकर भविष्य के समाज के बारे में एक एकीकृत विचारधारा प्रस्तुत करता है । यह भविष्य के समाज के बारे में सिद्धान्त बनाने का ऐसा प्रयास है जो दर्शनशास्त्र, साहित्यशास्त्र, कला, शिल्पकला आदि से बहुत कुछ ग्रहण कर अपने निश्चित संदर्श में वस्तुओं को व्यवस्थित करता है । यह भी सत्य है कि इस तथाकथित सिद्धान्त का आविर्भाव विकसित और पूंजीवादी देशों की जीवन–पद्धति से जुड़ा है । इसका एकमात्र उद्देश्य आधुनिक समाज के जो भी तथ्य और सिद्धान्त हैं उन्हें ध्वस्त करना है ।

Key Words: *उत्तर आधुनिकता संस्कृति, कला, साहित्य,इतिहास,स्वरूप एवं परम्परा*

उत्तर आधुनिकतावाद का जन्म फ्रांस में हुआ। सन् 1979 में क्यूबेक सरकार के आग्रह पर फ्रांसीसी विद्वान 'फ्रांसुआल्योतार' ने अति विकसित समाजों में विज्ञान और तकनीकी भूमिका तथा भाषा और व्यवहार के विषय में कुछ निष्कर्ष निकाले। वे निष्कर्ष 'द पोस्ट मॉडर्न कंडीशनः ए रिपोर्ट ऑन नॉलेज' नामक रिपोर्ट में सुरक्षित किये गये। यह रिपोर्ट मूल रूप में फ्रांसीसी भाषा में 1979 में प्रकाशित हुई। मानचेस्टर यूनिवर्सिटी प्रेस ने बाद में इसका अंग्रेजी अनुवाद प्रकाशित किया। फ्रांसुआल्योतार की रिपोर्ट अथवा पुस्तक में जो 'पोस्ट मॉडर्न' पद है, इसी का हिन्दी में अनुवाद 'उत्तर आधुनिक' के रूप में हुआ। इसके प्रचलन के बाद आधुनिक को 'आधुनिकता' में परिवर्तित करके 'उत्तर आधुनिकता' बनाया गया। बाद में इस विचार धारा को 'उत्तर आधुनिकतावाद' कहा गया। डॉ0 सुधीश पचौरी ने अपनी पुस्तक 'आलोचना से आगे' में इस तथ्य को प्रस्तुत किया है। हर्बर्ट साइमंस तथा माइकल बिलिंग का आग्रह है कि उत्तर आधुनिकतावाद के बाद हमें राजनैतिक और प्रॉक्सिस (Praxis) से जुड़ी विचारधारा का पुनर्निमाण करना होगा । उत्तर आधुनिकतावाद के बाद के समाज में नारी आंदोलन, दलित उत्कर्ष तथा दलित विमर्श तथा अलोचनात्मक मार्क्सवाद पर चिंतन की आवश्यकता है । कहाँ तक उत्तर आधुनिकता और उत्तर आधुनिकतावाद के बाद के समाज से जुड़े हुये समाजशास्त्रीय सिद्धान्त, समाज को खुशहाली की ओर ले जायेंगे, यह तो भविष्य ही बतलायेगा । उत्तर

आधुनिकता आज जिस स्थिति में दुनिया में है, वह कम विवादास्पद स्थिति में नहीं है। अभी इसके बारे में कोई निश्चित तस्वीर नहीं है। संपूर्ण अवधारणा धुंध और कोहरे से ढकी है। उत्तर आधुनिकता समाजशास्त्रीय सिृद्धांतों के महान वृतांतों को समुद्र की गहराई में फेंकने के लिए उद्यत है। इसके लिए प्रकार्यवाद अर्थात दरखाइम, मैक्सवेबर, पार्सन्स और मर्टन अर्थात दूसरे शब्दों में कहें तो महान वृतांत उपर्युक्त संदर्भों में अप्रासंगिक हैं। उत्तर आधुनिकता के सिृद्धांतों के हवाले से कहा जा रहा है पिछले सौ वर्षों में महान वृतांतों के सिद्धांत आदमी को खुशहाली देने के बजाय दुःख ही अधिक दिया है। उत्तर आधुनिकता बडी निर्ममता के साथ इन सब सिद्यांतों का विखंडन करती है। यह समाज आधुनिकता के मौलिक अवधारणाओं को ही खारिज करता है; इसे यह स्वीकार नहीं है कि इतिहास सदैव तरक्की की ओर ही ले जाता है। अब आने वाले समाज में समाजवाद के आने की कोई संभावना नहीं बची है। पूंजीवाद और प्रजातृंत्र ही इस समाज की नियति है। फ्रांसिस फुकूयामा के विचार में तो अब इतिहास का अवसान हो गया है। हमें पूँजीवाद, मीडिया, सिम्युलेशन, अतियथार्थता और प्रजातंत्र के साथ ही जीना–मरना है। यही इतिहास का अवसान है।

उत्तर आधुनिकता अपने दार्शनिक लहजे में ज्ञान की मीमांसा करता हुआ दिखाई देता है। इसे किसी भी प्रकार की व्यवस्था में विश्वास नहीं है। इसके लिए संपूर्ण प्रवक्ती बहुलवादी है। यह अनेकता का समाज है। यहां मीडिया हमें अति से खींचकर वर्तमान में ले आता है। हमारे सामने अनेक मूल्य हैं, जिनका हमारे स्थानीय समाज में कोई सरोकार नहीं रह गया है। आज प्रत्येक वस्तु प्रवाह और बहस में है। कहीं कोई निश्चितता नहीं है। प्रतिदिन यह दुनिया नई दुनिया बन रही है। इसकी लगाम वैश्वीकरण के हाथ में है। आज हमारे संपूर्ण अतीत की परिभाषाएं बदल रही हैं। कुछ आधुनिक विचारक तो यह मानते हैं कि – यह उत्तर आधुनिकता वस्तुतः एक खतरे से भरा समाज है, जो कभी भी हमें रसातल में धकेल सकता है। यह एक ऐसी अंधी गली है–जिसका कोई ओर–छोर नहीं पता है।

अगर हम भारतीय समाज में उत्तर आधुनिकता की बात करें तो यह एक फैशनेबल अवधारणा बन गई है। उत्तर आधुनिकता को कोई भी गंभीरता से नहीं लेता है। माना जाता है कि यह तो हल्के दर्जे का दर्शनशास्त्र है। जमीन से इसका कोई जुडाव नहीं है। कुछ लोगों के ख्याल में तो उत्तर आधुनिकता और कुछ नहीं– मात्र लफडा ही है, एक प्रकार की रंगरेली है। जैसे चाहो इसका प्रयोग कर लो।

यूरोप और अमेरिका में उत्तर आधुनिकता का प्रवेश भी कोई अधिक पुराना नहीं है। अरनाल्ड टोयन्बी ने इस पद का प्रयोग सबसे पहली बार किया था। इसके बाद सन 1979 ई0 में ल्योतार ने अपनी पुस्तकः दी पोस्ट मार्डन कंडीशन में पहली बार इस अवधारणा का प्रयोग किया। उनके अनुसार उत्तर आधुनिकता वस्तुतः एक जातीय, जेनेरिक अवधारणा है और केवल सृजनात्मक पद्यति ही नहीं है। जब ल्योतार ने इस अवधारणा को रखा तब उन्होंने बडी बुलंदी के साथ कहा कि आधुनिकता ने दो बडी अवधारणाएं समाज विज्ञान में चला रखी है। ये धारणाएं वास्तविकता पर आधारित न होकर केवल मिथक है। पहली भ्रमपूर्ण या गलत धारणा तो महान वृतांतों की है। इनके अनुसार वेबर, मार्क्स और दरखाइम के सिद्धांत मिथक हैं। ल्योतार का दूसरा उदेश्य उदारता के मिथक को तोडना भी है। उदारता से जुडा हुआ एक और मिथक है– जिसे ल्योतार सत्य का मिथक कहते हैं। उत्तर आधुनिकता की अवधारणाएँ केवल इसी कारण अस्तित्व में आईं कि समाजशास्त्र के सैृद्धांतिक

क्षेत्र में इन मिथकों ने जो गलफहमियां पैदा कर दी हैं–उन्हें दूर कर दिया जाए।

उत्तर आधुनिकता के संदर्भ में केलनेर का कहना है–उत्तर आधुनिक क्षण आ गया है और इसने बौद्धिकों, कलाकारों तथा संस्कृति उद्यमियों को ऐसी हैरत में डाल दिया है कि समझ में नहीं आता कि वे इसके साथ हो जाएं–इसकी रंगरेलियों में भागीदार बन जाएं या कहीं किनारे पर बैठ जाएं; जब तक कि यह सनक फैशन के बुलबुले की तरह समाप्त न हो जाए। उत्तर आधुनिकता की अवधारणा और इसके सिद्धांत में भी कोई सर्वसम्मति दिखाई नहीं देती। अपने देश में तो यह माना जाता है कि हिन्दी साहित्य में उत्तर आधुनिकता बहुत पहले ही अस्तित्व में आ गई है। सुधीर पचौरी अपनी पुस्तक–आलोचना से आगे, राधाकृष्ण प्रकाशन दिल्ली, में तो लिखते हैं–अरसे से हिन्दी में उत्तर आधुनिकता के अनुगूंजें सुनाई पड रही हैं। मनोहर श्याम जोशी के–कुरु कुरु स्वाहा को उत्तर आधुनिक उपन्यास कह कर विज्ञापित किया गया है। पुनः वे लिखते हैं कि समाज उत्तर आधुनिक स्थितियों में दाखिल हो चुका है। हमारे अनुभव उत्तर आधुनिक बन रहे हैं।

उत्तर आधुनिकता के सैद्धांतिक बहसों के बीच उत्तर आधुनिकता की परिभाषा एक मत विभिन्नता एवं सर्वसम्मत निष्कर्ष पर नहीं पहुँचाती। कुछ विचारकों के उत्तर आधुनिकता के संदर्भ में दी गई परिभाषाएँ इस प्रकार हैं– जिम मेक्गूगन–उत्तर आधुनिकता एक सांस्कृतिक और ज्ञान मीमांसा की दशा है जिसके परिणामस्वरूप आधुनिक सामाजिक संस्थाएँ दब जाती हैं और भूमंडलीय समाज की दिशा की ओर ले जाने वाले एक युगांतर आता है।

ल्योतार वह पहला व्यक्ति था जिसने उत्तर आधुनिक लीक पर विज्ञान और पश्चिमी दर्शन में हुए विकासों का विश्लेषण किया। ल्योतार का विचार था कि उत्तर आधुनिकता की धारणा की रूपरेखा मात्र प्रौद्योगिकी द्वारा ही निर्धारित नहीं होती। उनका कहना था कि नयी प्रौद्योगिकी लगातार विकसित हो रही है, इसलिए हमें इस प्रौद्योगिकी के अनुसार नवीन ज्ञान का विकास करने की आवश्यकता है, चूंकि नयी तकनीकें हमारे ज्ञान को प्रभावित करती हैं, इसलिए नयी तकनीकों द्वारा दी गयी चुनौती का सामना करने के लिए हमें प्रसंगानुकूल एवं वास्तविक और नवीनतम ज्ञान की आवश्यकता है। उसका यह भी मानना था कि विज्ञान और आख्यान का विरोध अर्थहीन है क्योंकि विज्ञान अपने आप में एक प्रकार का आख्यान है। वस्तुतः विज्ञान को उच्च स्तर के कथानकों द्वारा वैधता मिलती है। ल्योतार ने तीन ऐसे महाआख्यानों के बारे में बताया है, जो विज्ञान को वैधता प्रदान करते हैं। इनमें से पहला है धन की प्राप्ति, इसका अर्थ है कि विज्ञान की वैधता इस बात से है कि वह उन्नति का मार्ग प्रशस्त करता है और प्रौद्योगिकी एवं वाणिज्य के विकास में सहायक होता है। दूसरा, विज्ञान 'मुक्ति कर्ता' है। इसका अर्थ है कि विज्ञान शोषण और श्रम से मनुष्य को मुक्त करता है। तीसरा, मानस का द्वन्द्व, इसका अभिप्राय है कि विज्ञान विचारों की मुक्ति एवं विकास के द्वार खोलता है। उनकी दृष्टि में महावृतान्तों में एक तारतम्य, समग्रता और आध्यात्मिकता का द्वन्द्व होता है। उत्तर आधुनिकतावाद महावृतान्तों का विरोधी है। वर्तमान में उत्तर आधुनिकतावाद को पहचानने की आवश्यकता पर बल देते हुए डॉ0 सुधीश पचौरी ने लिखा है ''उत्तर आधुनिकता के लक्षणों को पहचानने के लिए उपलब्ध ज्ञान की अवस्था की पड़ताल जरूरी है। ज्ञान की आस्था दो प्रक्रियाओं पर निर्भर है– वैज्ञानिक प्रक्रिया और वृतान्त प्रक्रिया। ल्योतार कहते हैं कि वैज्ञानिक ज्ञान एक प्रकार का (डिस्कोर्स) है और जब तक यह विमर्श है, भाषा पर निर्भर है। पिछले चालीस–पचास सालों से विज्ञान अपने को खोलने के लिए लगातार भाषा के सिद्धान्तों में फंसा रहा है, यह

संचार साइबर नैटिक्स, गणित, कम्प्यूटर, उनकी भाषा, अनुवाद की समस्या, सूचना संग्रह और आंकड़ा बैंकों पर निर्भर है।''

उत्तर आधुनिकता के प्रमुख लक्षण :उत्तर आधुनिकता के प्रमुख लक्षण निम्नलिखित हैं –1. आधुनिकतावाद और उससे जुड़े प्रतीकों को नकारना ।2. अति तर्कवाद का विरोध करना ।3.समग्रतावादी सार्वभौमिक तथ्यों के प्रति अविश्वास । 4.विज्ञान के प्रबोधनकालीन लक्ष्यों को मात्र एक छलावा मानना।5.सामाजिक विज्ञान सहित सभी विज्ञानों के महान वृतांतों को मिथक मानना और उनके विखण्डन पर जोर देना (दरिदा)।6.परम्परा और समुदाय का काल्पनिक (अव्यवहारिक) आधार पर बचाव करना।7. मूल्य मीमांसा (एक्जीऑलॉजी) की उपेक्षा। 8.आधुनिक प्रौद्योगिक सभ्यता की अनुदारवादी आलोचना (मार्टिन हाइडेगर)।9.समकालीन पूँजीवाद की अतिवादी आलोचना (जैसे–एडोर्नो ने की है)।10. स्थायित्व की अपेक्षा अस्थायित्व को दर्शाने वाली क्रियाओं,विचारों और इच्छाओं का महत्व (फूको)।

पिछले कुछ वर्षों में जब हम किसी चित्रकार की कलाकृति को समझने का प्रयास करते थे जब कहा जाता था कि यह आधुनिक कला है, और इसलिए हमारी समझ में कठिनाई से आयेगी । उत्तर–आधुनिकता इस आधुनिक कला का अगला कदम है । यह कहां तक समझ में आयेगी, कहना मुश्किल है । उत्तर–आधुनिकता के चरण हमें विभिन्न विधाओं में देखने को मिलते हैं । यह उत्तर–आधुनिकता कथा साहित्य और काव्य में उपलब्ध है, शिल्पकला में देखने को मिल सकता है । नृत्य, संगीत और नाट्यकला में इसके स्वरूप को देखा जा सकता है । एक प्रकार से उत्तर आधुनिकतावाद तो किसी रंग की तरह है जिसे किसी भी वस्तु पर पोता जा सकता है । वस्तु कैसी भी हो–घटिया या बढ़िया, उत्तर आधुनिकता के रंग को लगा दीजिए, कहते हैं वस्तु निखर जायेगी ।

पश्चिमी देशों और अमेरिका में इन दिनों उत्तर–आधुनिकता सामान्य जन–जीवन का मुहावरा बन गया है । उदाहरण के लिये इन देशों में कई कलाकृतियों, बौद्धिक तथा अकादमिक क्षेत्रों में, उत्तर–आधुनिकतावाद देखने को मिलता है । वे नामी गिरामी लोग या कलाकार जो किसी न किसी तरह उत्तर–आधुनिकता से जुड़े हैं, उनमें रोशेनबर्ग, बोसेलिट्ज, स्नेलबेल, वारहोल और शायद बेकन के नाम कला जगत में उल्लेखनीय हैं । शिल्पकला के क्षेत्र में जेन्क्स तथा वेन्चूरी के नाम लिए जाते हैं । नाटक की विधा में अर्तोड का नाम शीर्ष पर है । कथा साहित्य के क्षेत्र में बार्थ और बार्थाम के नाम अग्रणी पंक्ति में हैं । फिल्मी दुनिया के उत्तर–आधुनिकतावाद में लिंच का नाम उल्लेखनीय है । कुछ इसी तरह फोटोग्राफी में शेरमन तथा समाजशास्त्र व दर्शनशास्त्र में देरिदा, ल्योटार्ड तथा बोड्रिलार्ड के नाम लिए जाते हैं ।

उपरोक्त विचारकों ने उत्तर आधुनिकता की व्याख्या के तीन प्रमुख दृष्टिकोणों को रेखांकित किया है–1.उत्तर आधुनिकता उस आधुनिकतावादी ज्ञान मीमांसा को चुनौती देती है जिसमें विषयी और वस्तु के बीच अन्तर किया जाता है। 2.उत्तर आधुनिकता महावृतांतों और आख्यानों को अस्वीकारती है । ल्योतार ने इसे आधुनिकता के विस्तार और महावृतांतों के प्रति अविश्वास माना है।3.उत्पादन के आधुनिकतावादी पैराडाइन के स्थान पर उत्तर आधुनिक काल में प्रौद्योगिकी पर सर्वथा नये ढ़ंग से विचार किया जा रहा है । आजकल इसे उत्पादन के स्थान पर पुनुरुत्पादन पर केन्द्रित किया जा रहा है ।

उत्तर–आधुनिकता भी एक विचारधारा है।सच में देखा जाय तो आज समाज विज्ञानों और दिन–प्रतिदिन के संवाद में 'उत्तर–आधुनिकता' फैशन के रूप में लोकप्रिय

होता जा रहा है । यदि किसी समाज वैज्ञानिक को या इस अर्थ में किसी कलाकार, शिल्पकार या संगीतकार को अव्वल दर्जे का बना है तो उसे किसी न किसी प्रकार अपनी अभिव्यक्ति उत्तर–आधुनिकता में दर्ज करनी होगी । एक प्रकार से उत्तर–आधुनिकतावादी शब्द का प्रयोग ही व्यक्ति को आधुनिकतम बना देता है ।

सहायक ग्रंथ

1. पालीवाल कृष्णदत्त, उत्तर आधुनिकतावाद की ओर, 2008
2. अरोड़ा अतुलवीर, आधुनिकता के संदर्भ में आज का हिन्दी उपन्यास–पब्लिकेशन ब्यूरो,पंजाब विश्वविद्यालय,1974
3. बोरा राजमल, हिन्दी उपन्यास : प्रयोग के चरण–वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, 1972
4. यादव डॉ0 वीरेन्द्र सिंह, उत्तर आधुनिकता : कुछ अक्स,कुछ अन्देशे,ओमेगा प्रकाशन,नई दिल्ली,2010
5. वर्मा धनंजय, आधुनिकता के बारे में तीन अध्याय–विद्या प्रकाशन, 1984
6. सिंह ,विजय बहादुर,.उपन्यास समय और संवेदना–,वाणी प्रकाशन ,नई दिल्ली–2008
7. जलील डॉ0 वी0के0 अब्दुल, समकालीन हिंदी उपन्यास : समय और संवेदना–वाणी प्रकाशन,दिल्ली–2006
8. चौहान डॉ0 अर्जुन उपन्यास समय और संवेदना , वाणी प्रकाशन,नई दिल्ली–2008
9. पचौरी सुधीश,उत्तर आधुनिकता प्रस्थान बिन्दु– वाणी प्रकाशन,दिल्ली–2006
10. पचौरी सुधीश,उत्तर आधुनिक साहित्य विमर्श–वाणी प्रकाशन,दिल्ली–2006
11. मदान इन्द्रनाथ, आधुनिकता और हिन्दी उपन्यास–वाणी प्रकाशन,नई दिल्ली–2008
12. पालीवाल कृष्णदत्त, उत्तर आधुनिकता और दलितवाद–वाणी प्रकाशन,दिल्ली–2006
13. नवीन देवी शंकर, मिश्र सुशांत कुमार, उत्तर आधुनिकता कुछ विचार–वाणी प्रकाशन,दिल्ली–1997
14. यादव डॉ0 वीरेन्द्र सिंह, उत्तर आधुनिकता : विचार और मूल्यांकन,ओमेगा प्रकाशन,नई दिल्ली,2010
15. पांडे, सीतांशु, भूषण,डॉ0 शशि आधुनिकता और उत्तर आधुनिकता के औजार–म.रा. प्र0 समिति,अक्षरा,भोपाल,म.प्र.
16. सिंह ,विजय बहादुर,.उपन्यास समय और संवेदना–,वाणी प्रकाशन ,नई दिल्ली–2008